Academe *Journal of Education & Psychology*
Volume-1, Issue-1, Year-2011 (January-June)
PP: 11-14 *ISSN No: 2249-040X*

हरियाणवी लोक साहित्य की प्रासांगिकता–लोक गीतों के माध्यम से

किरण शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, यमुनानगर

भारत वर्ष ग्रामों में बसता है । देश की अधिकांश जनता ग्रामीण अंचल में निवास करती है। ग्रामीण लोक–समाज जिन शब्दों में अपने हृदय के उद्‌गार प्रकट करता है और साधारण जनता जिन शब्दों में अपने हृदय के उद्‌गार प्रकट करता है और साधारण जनता जिन शब्दों में गाती–रोती है, हँसती–खेलती है – उन सभी को लोक साहित्य में परिगणित किया जा सकता है ।

लोक साहित्य के विषय में विद्वानों के विचारों में मतभेद है । वास्तव में लोक–साहित्य लोक की ही सम्पत्ति कहा जा सकता है । विद्वानों का एक वर्ग मानता है कि – 'लोक साहित्य की रचना स्वयमेव होती है । दूसरे वर्ग का मानना है कि 'जाति के समस्त व्यक्ति मिलकर इसकी रचना करते है । मौखिक धरोहर के रूप में पीढ़ी–दर–पीढ़ी चला आ रहा लोक–साहित्य अनेक कंठों द्वारा सजता–संवरता रहा है । सभ्यता और संस्कृतियों के उत्थान–पतन की कहानी समेटता लोक–साहित्य अपनी स्वाभाविक गति से आगे बढ़ता रहा है । साहित्य का उत्थान और पतन हुआ लेकिन लोक–साहित्य का झरना अजस्त्र प्रवाहित होता रहा । यह परम्परा से प्राप्त खजाना दिनों दिन बढ़ता गया । किसी भी लोक का साहित्य जीवन के धार्मिक, आर्थिक, समाजिक पहलुओं से घनिष्ठ संबंध रखता है ।

जब हरियाणवी भाषा के लोक–साहित्य की बात करते हैं तो वहां के लोक–साहित्य में पारिवारिक जीवन का जो चित्र प्राप्त होता है, वही प्रायः देश के अन्य लोक–साहित्यों द्वारा भी प्रकट किया गया है । हरियाणा प्रदेश कृषि–प्रधान प्रदेश है । वहां के जीवन के सामान्य तत्व लोक–साहित्य में बंधकर हमारे समक्ष आते है । अतः हरियाणा के लोक–साहित्य में कृषि–सम्बन्धी विषयों का गान मिलता है । कुरूक्षेत्र की भूमि को कुरू भूमि के नाम से जाना जाता है । यह धर्म और कर्म का क्षेत्र रहा है । यहां के लोगों का जीवन सादा और उच्च विचार है । वे खेतों में मेहनत मजदूरी द्वारा जीविकोपार्जन करते है ।

हरियाणा प्रदेश में लोकगीत साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है । उसका विस्तार इतना अधिक है कि जीवन का कोई पक्ष, भाव तथा व्यापार ऐसा नहीं जो लोकगीतों में विद्यमान न हो । हरियाणा के लोक गीतों के विभाजन के कई आधार संभव हैं । सर्वप्रथम इन गीतों को दो भागों में बांट सकते है :–

1. स्त्री समागतगत लोकगीत ।
2. पुरूष समाजगत लोकगीत ।

स्त्रीसमाजगत लोकगीत प्रायः मुक्त होते है । षोडस संस्कारों के लोकगीत स्त्रियों द्वारा ही गाए जाते है । पुरूष समाजगत गीत पुरूष समाज द्वारा गाए जाते है । इनके कथानक प्रायः लम्बे होते है । ये गीत रसिया, मल्हार और कजरी आदि है । ये गीत प्रायः श्रृंगार

और वीर रस के होते है । संस्कार सम्बन्धी लोकगीतों के माध्यम से लोक साहित्य की प्रासंगिकता को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

हिन्दू जीवन सांस्कारिक अधिक है । इसमें भिन्न–भिन्न संस्कार अपने–अपने समय पर आते रहते है । ये संस्कार हिन्दू–जीवन के नियामक का कार्य करते है । जन्म, विवाह एवम् मरण–तीन मुख्य स्थितियां हे, जिनके आस–पास मानव–समूह विश्वासों, रीति–रिवाजों और व्यवहारों का ऐसा ताना–बाना बुन लेता है कि उनके स्वरूप को समझे बिना उस संस्कृति का पूर्ण चित्रण प्राप्त ही नहीं किया जा सकता । उनमें मृत्यु को छोड़कर शेष संस्कार हर्ष और उल्लास के परिवेश में सम्पन्न किए जाते है । इन अवसरों पर नारी कंठ अपने संपूर्ण लोच एवम् माधुर्य के साथ मुखरित हो उठता है ।

जन्म संस्कार मानव–जीवन का प्रारंभिक संस्कार है । अतः जब से बच्चा गर्भ में आता है, उससे कुछ ही महीने के पश्चात् से ही कोई न कोई अनुष्ठान आरम्भ हो जाता है। जन्म संस्कार के साथ 'पुत्र' शब्द जोड़ देने पर ही संस्कार का अर्थ समझा जा सकता है, क्योंकि पुत्र प्राप्ति भारतीय दृष्टिकोण से एक महान यज्ञ का समापन हे । यह बड़ी चुनौतियों और चिर–अभिलाषाओं का शुभ परिणाम माना जाता है । पुत्र के जन्म के बाद जो गीत गाए जाते है, उन्हें जच्चा गान कहा जाता है । इन गीतामें पुत्र–जन्म की प्रसन्नता प्रकट की जाती है । हरियाणा के लोकगीतों में पुत्री के जन्म को ही शुभ नहीं माना गया है । इस अवसर पर माता का निरादर होता है और शोक छा जाता है । दूसरी बार पुत्रोत्पत्ति पर 10 या 11 दिन तक आनंद मनाया जाता है । 'बधावां गाया जाता है । जिसमें पुत्र के जन्म की बधाई सभी परिवार जनों को दी जाती है । पुत्र की लम्बी व सुखी आयु की कामना की जाती है । पुत्री के जन्म पर 'ठेंकरा' फोड़कर शोक व्यक्त किया जाता है । हरियाणा की किसी छोरी ने इस बात को निम्नलिखित लोकगीत के माध्यम से इस प्रकार कहा है –

"म्हारे जन्म में री बाजें री ठीकरे,

भाई के जन्म में बाजे थाली

बुड्ढे की रौवै बुढली,

अर रोवें हाली–पाली' ।"

अर्थात् वह कहती है कि मेरे जन्म के समय तो कच्ची मिट्टी के घड़े का टुकड़ा फोड़ गया और भाई के जन्म पर थाली बजाकर खुशी प्रकट की गई । मैं पैदा हुई जब बुड्ढा दादा और बुड्ढी दादी, खेत पर हल चलाता बाप तथा चाचा–ताऊ सभी रोने लगे । पुत्र देने के लिए एक लोकगीत के माध्यम से भगवान का धन्यवाद किया गया है कि उन्होंने सुन्दर पुत्र दिया है –

'चंदा जिसी चांदणी, गुलाब जिसा फूल ।

सूरज जिसी किरण, मनै राम दिया लाल ।'

एक अन्य लोकगीत में प्रसूता प्रसव वेदना के समय अपने पति से कुछ सहानुभूति की आशा करती है। परन्तु वह आराम से हुक्का गुड़गुड़ा रहा है । इस बात का बदला वह यूं लेती है कि और सबको तो 'पंजीरी' तथा गूंद खाने के लिए देगी परन्तु उसे नहीं देगी –

"मेरे उठै थी पीड़

तन्नै आवै थी नींद,

ठोसा खाले पंजीरियां ।

नां दयूं ना दंयू पंजीरियां

मेरै उठै था गुस्सा,

तेरा बाजै था हुक्का,

ठोसा खाले पंजीरियां

नां दंयू ना दंयू पंजीरियां ।"

पुत्र जन्म के बाद ननद को नेग इत्यादि दिए जाते हैं । ननद को मन पसंद नेग मिलता है वह अपने भतीजे को आशीर्वाद देकर अपने घर से विदा होती है । वह अपने भाई को सम्बोधित करते हुए कहती है –

'बीरा रे तेरी लाम्बी बंधियो बेल,

मैं राजी करकै घाली,

हीरा बन्द चूंदडी ।'

विवाह संस्कार जीवन का महत्वपूर्ण अंग है । जिनमें अनेक रीति–रिवाज समाहित है– सुहाग, बनड़े, भात तथा अन्य हास्य व्यंग्य के गीत इस अवसर पर गाए जाते है । भात के समय गाए जाने वाले गीत का उदाहरण –

'गलियारा सकेर आई री

के भाती आवेंगे ।

मेरा चूंडा मरकै री के चून्दड़ ल्यावेगे ।'

कन्या विदाई का दृश्य बड़ा कारूणिक होता है । जीवन में बड़े–बड़े संकट झेलने वाले गम्भीर पुरूष भी इस अवसर पर सुबक–सुबक कर रोते देखे जाते है । कन्या को विदा करके कन्या का पिता तो हारे जुआरी सा लगता है और कन्या का ससुर जीत की खुशी में झूमता अपने घर जाता है ।

मनुष्य जीवन का अन्तिम संस्कार मृत्यु है । इसे अन्त्येष्टि संसार भी कहते है । मृत्यु तो मृत्यु है – इसे कौन गाकर रोएगा । परन्तु जो व्यक्ति बड़ी–अवस्था में अपने बेटे–पोतो, पड़पोतों के सामने स्वाभाविक मृत्यु पाता है, उसे गाजे, बाजे के साथ अन्तिम विदाई दी जाती है ।

इसके अतिरिक्त सावन के गीत, कार्तिक के गीत, जाति–गीत, देवी–देवताओं एवम् व्रतों के गीत, क्रीड़ा गीत, गुड़ियों के विवाह के गीत, स्त्री–पुरूष वर्ग के श्रम गीत, लोक गाथा के अन्तर्गत पौराणिक गाथाएं, वीर गाथाएं, प्रेम गाथाएं, शिक्षा प्रद लोक कथाएंद्व हास्य परक लोक गाथाएं, लोक नाट्य के अन्तर्गत सांग, कठपुतली, लीला, नौटंकी, खोड़िया, भगत, लोक सुभाषित सामाजिक कहावतें, ब्राह्मण बनियों से सम्बन्धी कहावते तथा लोक–विश्वास सम्बन्धी लोकोक्तियां प्रचलित है ।

लोक साहित्य के अन्तर्गत आए जाने वाली परम्पराएं, रीति–रिवाज, साहित्य में वर्णित विविध प्रसंगों का आज भी उतना ही महत्व है, जितना पहले था । आधुनिक युग में हरियाणवी लोक साहित्य के महत्त्व को समझा गया इसी कारण विविध आधारों पर लोक साहित्य का अध्ययन हुआ । लोक साहित्य में लोक का वास्तविक चित्रण होता है । परम्परा से अनुस्यूत जन–जन में व्याप्त हरियाणा का लोक साहित्य पर्याप्त समृद्ध है । आधुनिक सभ्यता के प्रचार–प्रसार के कारण लोक–साहित्य धीरे–धीरे लुप्त होता जा रहा है। सिनेमा, टेलीविजन आदि के प्रचलन से लोक गीतों को गहरा धक्का लगा है । विवाहादि के अवसर पर फिल्मी तर्ज के गीतों का प्रचलन अधिक हो गया है । परन्तु इन स्थितियों के बावजूद भी हरियाणा के लोक साहित्य के महत्व को देखते हुए लोक साहित्यकार इसके संरक्षण में विशेष रूचि ले रहे है । आकाशवाणी और दूरदर्शन केन्द्रो के देहाती कार्यक्रम भी लोक साहित्य को सबल बनाने में प्रभावशाली साधन है । अन्त में विश्वास के यह कहा जा सकता है कि हरियाणा का लोक साहित्य अनगिनत अमूल्य रत्नों से भरा पड़ा है । लोक–कवि, लेखक और साहित्यकार इसके प्रति जागरूक है तथा इसका भविष्य उज्ज्वल है । इसकी गुणवत्ता को देखते हुए इसकी प्रासांगिकता प्रत्येक क्षेत्र में स्वंयसिद्व हो जाती है ।

आधारग्रन्थ

1 हरियाणा लोक साहित्य – सांस्कृतिक सन्दर्भ – डॉ. भीम सिंह मलिक
2 हरियाणा का हिन्दी साहित्य–उद्भव और विकास – डॉ. शिव प्रसाद गोयल
3 हरियाणा संस्कृति एवम् कला – डॉ. सन्तराम देशपाल